कौटिल्यकालीन समाज में जाति–व्यवस्था

डॉ० शक्ति मोहन मिश्र

जहाँ तक कौटिल्यकालीन समाज में जाति–प्रथा का प्रश्न है, वहाँ उल्लेखनीय है कि उनके पूर्व के समाज के वर्ण–व्यवस्था में विघटन की जो प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी वह इस समय भी जारी थी। इस तरह इस समय की वर्ण–व्यवस्था जाति–प्रथा के रूप में परिपक्वता प्राप्त करने की बढ़ने की दिशा में बढ़ती जा रही थी। उस समय समाज में जाति–व्यवस्था की जो प्रकृति थी उसके सम्बन्ध में विद्वानों में थोड़ी–सी मत–भिन्नता देखने को मिलती है। मेगास्थनीज, जो कि मौर्य के राज्य–सभी में से सेल्युकस का दूत होता था, न लिखा है कि मौर्यकालीन समाज में यानी की कौटिल्यकालीन समाज सात जातियों (वर्णों) में विभाजित थी।